

## ॥ रामाष्टकम् ॥

भजे विशेषसुन्दरं समस्तपापखण्डनम्।  
 स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव राममद्वयम् ॥ १ ॥  
 जटाकलापशोभितं समस्तपापनाशकम्।  
 स्वभक्तभीतिभञ्जनं भजे ह राममद्वयम् ॥ २ ॥  
 निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम्।  
 समं शिवं निरञ्जनं भजे ह राममद्वयम् ॥ ३ ॥  
 सहप्रपञ्चकल्पितं ह्यनामरूपवास्तवम्।  
 निराकृतिं निरामयं भजे ह राममद्वयम् ॥ ४ ॥  
 निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पनिर्मलं निरामयम्।  
 चिदेकरूपसन्ततं भजे ह राममद्वयम् ॥ ५ ॥  
 भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम्।  
 गुणाकरं कृपाकरं भजे ह राममद्वयम् ॥ ६ ॥  
 महासुवाक्यबोधकैर्विराजमानवाक्पदैः।  
 परं ब्रह्मसद्वापकं भजे ह राममद्वयम् ॥ ७ ॥  
 शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम्।  
 विराजमानदेशिकं भजे ह राममद्वयम् ॥ ८ ॥

रामाष्टकं पठति यः सुखदं सुपुण्यम्  
व्यासेन भाषितमिदं शृणुते मनुष्यः।  
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिम्  
सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥ ९ ॥  
॥ इति श्री व्यासविरचितं श्री रामाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

---

This stotra can be accessed in multiple scripts at:

<http://stotrasamhita.net/wiki/Ramashtakam>. This PDF was downloaded from  
<http://stotrasamhita.github.io>.

Facebook: <http://facebook.com/StotraSamhita>

GitHub: <http://stotrasamhita.github.io> | <http://github.com/stotrasamhita>

Credits: <http://stotrasamhita.github.io/about/>